The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 4 | April 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का 21वीं सदी मे प्रासंगिकता का अध्ययन

डा0 पूनम बाजपेई

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र विभाग), मेजर एस.डी. सिंह विश्वविद्यालय

पूजा यादव

(शोध छात्रा), मेजर एस.डी. सिंह विश्वविद्यालय

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20126920

कृष्णमूर्ति का जन्म 11 मई 1895 को आन्द्रप्रदेश के चितूर जिले में मदनपल्ली में हुआ था। इनकी माता संजीवग्या, पिता जिद्दू नारायणीय थे। आठवीं संतान होने के कारण इनका नाम कृष्णमूर्ति रखा गया। इनके गांव का नाम जिद्दू होने कारण इनका नाम जिद्दू कृष्णमूर्ति रखा गया। 1905 में इनकी माता के देहांत हाने पर पिता नारायणीय थियोसोफिकल सोसायटी की अध्यक्षा श्रीमती एनीबेसेन्ट के आमन्त्रण पर मद्रास के अड्यार में स्थित थियोसोफिकल सोसायटी परिसर में रहने लगे। द्वितीय विश्व युद्ध के समय कैलीफोर्निया में रहे। इसके पश्चात इन्होंने सम्पूर्ण विश्व में भ्रमण किया, सार्वजनिक सभाएं, साक्षात्कार ' निजी विवेचनाओं से वाद–विवाद व लेखन कार्य किया । ये कार्य इन्होंने गुरू के रूप में नहीं मात्र सत्यानवेषी, पथ प्रदर्शक व मित्र के रूप में किये। भारत सहित इंग्लेण्ड में इन्होंने विशेष विद्यालय खोले, नवम्बर 1985 में भारत अन्तिम बार आये, 1986 ई.में अस्वस्थ हो गये, 17 फरवरी 1986 में इनका शरीर शान्त हो गया।

जे० कृष्णमूर्ति की दृष्टि में शिक्षा का अर्थ

जे0 कृष्णमूर्ति ने शिक्षा के ऐसे स्वरूप को स्वीकार किया जो मानव मे जीवन के प्रति नवीन दृष्टिकोण को विकसित करें। इन्होंने शिक्षा के अर्थ को एक नई दिशा दी है। उनके अनुसार, **''अज्ञानी वह व्यक्ति नही है जो विद्वान नही है। अज्ञानी वह है जो स्वयं अपने को नहीं जानता, और ऐसा विद्वान व्यक्ति मूढ़ है जो समझ अथवा बोध के लिए किताबों पर, जानकारियों पर और प्रमाण पर निर्भर रहता है। बोध केवल आत्मज्ञान से आता है और आत्मज्ञान आता है अपनी समस्त मानसिक प्रक्रिया के प्रति सजगता से। इस प्रकार शिक्षा का वास्तविक अर्थ स्वयं को समझना है, क्योंकि हम में से प्रत्येक में सम्पूर्ण अस्तित्व समाहित है''।**

वैश्विक दृष्टि से सुक्त मन का निर्माण करें न कि राष्ट्रवादी संकीण मन का– जे0 कृष्णमूर्ति का मानना है कि हम सब एक ही विश्व के नागरिक है और इस धरती का हम साझा आवास के रूप मे प्रयोग कर रहे हैं। इसलिये हमारा मन ऐसा होना चाहिये जो केवल इस देश के लिये नही बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिये संवेदनशील हो। अगर हमारे पास ऐसा मन हो तो जो जिसकी लाठी उसकी भैंस वाले सिद्धान्त मे विश्वास न रखता हो तो न सेनाऐं

होंगी, न मारक हथियार की होड़ होगी और न ही युद्ध होगें। यही वह भविष्य है जो 21वीं सदी मे इस धरती पर उतारना चाहिये। स्थानीय समस्याओं के निराकरण के लिये काम जरूर हो लेकिन उसे भी वैश्विक समझ से किया जाना महत्वपूर्ण है।

- **मानवीय विकास पर बले दें, केवल अर्थिक विकास पर नही–** जे0 कृष्णमूर्ति कहते है कि शिक्षा द्वारा बच्चों को केवल देश की आर्थिक प्रगति के लिये प्रयोग नही करना चाहिये। सभी मनुष्य अपनी योग्यताओं के पैमाने से अलग–अलग हो सकते है लेकिन वे असमान कतई नही है, न कोई उच्चतर और न कोई निम्नतर। सबको आदर मिले, उनकी योग्यताऐं चाहे जितनी हो। भलमनसाहत का मूल्य दक्षता से कहीं अधिक आकाँ जाना चाहिये।

- **जिज्ञासा को, खोज को प्रोत्साहित करें, अनुसरण को नही**– जे0 कृष्णमूर्ति कहते है कि बच्चों को अपने विचार मनवाने की बजाय सवाल करते हुए बड़ा होना दीजिए। आंख मूँदकर बात मान लेने और सवाल किये बिना अनुसरण करने की अपेक्षा तहकीकात करने एवं स्वतः सीखने की क्षमता कहीं अधिक महत्व रखती है।

- **प्रतिस्पर्धा नही, सहयोग सीखाऐं–** जे0 कृष्णमूर्ति कहते है व्यक्तिगत उपलब्धि की अपेक्षा दूसरों के साथ समन्वयपूर्वक सामूहिक रूप से कार्य करना कंही अधिक महत्वपूर्ण एवं सार्थक होता है। सहयोग–सहकारिता प्रजातन्त्र का मूल तत्व है।

- **हासिल करने की लालसा वाले मन की अपेक्षा सीखने वाले मन का सृजन करें–** जे0 कृष्णमूर्ति कहते है कि स्मृति का भण्डार बनाने के अपेक्षा प्रज्ञा को, समझ को, जगाना अधिक महत्व रखता है, जीवन मे भी और शिक्षा मे भी। जब एक बच्चे को कोई जानकारी देते है तो उसका ज्ञान बढ़ा रहे होते है, लेकिन समझदारी इसमे है कि उसके भीतर स्वयं सीखने की, स्वयं जानने की योग्यता पैदा की जाऐ।

- **ऐसा मन–मस्तिष्क उत्पन्न करें जो सही मायनो मे वैज्ञानिक भी हो और धार्मिक भी–** हमारा लक्ष्य एक ऐसा मन –मस्तिष्क बनाने का होना चाहिये जो समान रूप से वैज्ञानिक भी हो और धार्मिक भी यानी जो खोजी हो, स्पष्ट हो और सन्देहवादी हो लेकिन साथ ही उसमे सौन्दर्य, अचरज, संवेदनशीलता और विनम्रता का अहसास मौजूद हो और बुद्धि की सीमितता से वह भलि–भांति अवगत हो।

- **जीने की कला–** जे0 कृष्णमूर्ति कहते है कि जीने की कला को किसी सूत्र या सिद्धान्त की तरह नही सिखाया जा सकता। यह तो जीवन को और स्वयं को समझने के साथ स्वतः आती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिये अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति मे नीहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष जोर देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का आधार सिद्धान्त–

- हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास–
- बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे लचीलेपन का गुण है ताकि शिक्षार्थि अपनी प्रतिभा एवं रूचियों के अनुसार जीवन मे अपना रास्ता चुन सकें।
- बहु–विषयक और समग्र शिक्षा का विकास अवधारणात्मक समझ पर जोर
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे रटंत विद्या के स्थान पर अवधारणात्मक समझ पर जोर दिया गया है
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा का सिद्धान्त तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करने पर बल देता है।
- बहु–भाषिकता और अध्ययन–अध्यापन का कार्य मे भाषा शक्ति को प्रोत्साहन देना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सीखने के लिये सतत मूल्याकंन पर जोर देती है।
- शैक्षणिक नियोजन और प्रबन्धन मे तकनीकी के यथासंभव उपयोग पर जोर देती है।
- सभी शैक्षिक निर्णयों की आधाशिला के रूप मे समता और समावेशन
- शिक्षकों और संकाय को सीखने की प्रक्रिया को केन्द्र माना गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उपरोक्त सिद्धान्तो का अध्ययन करने के उपरान्त शोधकत्री ने पाया कि जे0 कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों मे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कुछ अंशो पर समानता दृष्टिगत हो रही है तथा उसमें जे0 कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का प्रतिबिंब परिलक्षित हो रहा है।

जे0 कृष्णमूर्ति इसे दुर्भाग्यपूर्ण बताते है कि हमने वैज्ञानिक खोज को धार्मिक खोज से विभाजित कर दिया है और शिक्षा देने के लिये केवल वैाानिक खोज पर ही सारा ध्यान केन्द्रित कर दिया है। सच तो यह है कि यह दोनो पहलू एक दूसरे के अनुपूरक है। एक तो उस बाहरी व्यवस्था मे खोजबीन करता है जो पदार्थ, ऊर्जा, आकाश और समय के प्रकट रूप मे है औश्र दूसरा हमारी चेतना के भीतर संसार मे व्यवस्था (शान्ति, समन्वय, गुण) उत्पन्न करता है। दरअसल ये दोनो उस उस एक ही वास्तविकता के दो अनुपूरक पहलुओं मे सत्य का अन्वेषण करते है जोकि पदार्थ और चेतना के सम्मिश्रण से निर्मित है। भारतीय जड़ों और गौरव से बंधे रहना और जहां प्रासंगिक लगे वहीं

भारत की समृद्ध और विविध प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति और ज्ञान प्रणालीयों तथा परम्पराओं को शामिल करना और उससे प्रेरणा पाना भी शिक्षा नीति 2020 का एक सिद्धान्त है।

निष्कर्ष

जे0 कृष्णमूर्ति के विचार नवीनतम् राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जोकि 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है, मे अत्यन्त ही प्रासंगिक है। उनका मानना है कि इस 21वीं सदी का तकाजा है कि जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण और शिक्षा की अपनी संकल्पना को हम पूरी तरह बदल डालें। उन्होने रटने बजाय समझने की प्रक्रिया पर बल दिया जो कि आज के यांत्रिक युग मे मानवीय मूल्यों को पुर्नजीवित करने के लिये आवश्यक है। शिक्षा के लिये उनके विचार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उन विचारों कर प्रतिबिंम्ब से स्पष्ट है कि उनकी विचार आज भी जीवन्त है और शिक्षा के विकास को दिशा प्रदान कर रहा है। जे0 कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों के भांति ही नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धान्त अवधाराणात्मक, तार्किक, अलोचनात्मक और रचनात्मक सोच, आत्मज्ञान, तकनीकी ज्ञान के साथ–साथ संवेदनशीलता, स्वतन्त्र, मानवीय मन का निर्माण, करुणा, सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक स्वभाव, सच्चे मूल्यों, भयमुक्त शिक्षा और अन्य उच्च–स्तरीय कौशल वाले समग्र और एकीकृत व्यक्तियों को विकसित करना है। जे0 कृष्णमूर्ति की भांति ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समग्र शिक्षा लाने के लिए, एक एकीकृत पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र, एक समग्र दृष्टिकोण वाले शिक्षक, माता–पिता की भागीदारी और निडर स्कूल का माहौल आवश्यक है। राष्ट्रीय नीति 2020 मे कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारो के कुछ अंशो का प्रतिबिंब का होना इस बात का संकेत है कि परिवर्तन का प्रारम्भ हो चुका है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 21वीं सदी के लिये प्रगतिशील प्रतीत होती है और यह एक समग्र व्यक्तित्व के निर्माण मे, बच्चों को पूर्णता में पुष्पित होने के लिए सहयोगी होगी।

'' जब हम अपने अन्दर देखते है तो क्या आपको यह नही पता चलता कि आप एक सेकेंड–हैण्ड इन्सान है, बस एक नकल हैं। स्वयं को एक सेकेंड–हैण्ड इन्सान समझना शायद आपको अप्रिय लगे लेकिन क्या हम दूसरें लोगो द्वारा दी गयी जानकारियों से भरे हुए नही है–किसने क्या कहा, किस दार्शनिक ने, या किस गुरू ने या बुद्ध ने क्या कहा, ईसा ने क्या कहा, आदि। हम इन सब बातों से भरे हुऐं हैं। यदि आपका स्कूल, कालेज या विश्वविद्यालय जाना हुआ है, वहाँ भी आपको कहा गया है कि आप क्या करें, क्या सोचें। ''

सन्दर्भ ग्रन्थ

- जे0 कृष्णमूर्ति–शिक्षा क्या है, अनुवादक विनय कुमार वैध, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली ।
- जे0 कृष्णमूर्ति–शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य, अनुवादक डा0 डी0एस0 वर्मा, कृष्णमूर्ति फाउन्डेशन इंडिया, राजघाट, वाराणसी।
- पद्मनाभन कृष्णा, जे0 कृष्णमूर्ति, शिक्षाओं का अन्वेषण, भाग 2, पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग, वाराणसी।
- जे0 कृष्णमूर्ति– आमूल क्रान्ति की चुनौति, अनुवादक कुमुद रामानंद बंसल, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली।

- जे0 कृष्णमूर्ति– मन क्या है ?, अनुवादक पुष्पिता, लवीन, शक्ति, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, http/www.education.gov.in, NEP_final_Hi_0